3 समास

समास का अर्थ है – संक्षिप्त। जब दो या दो से अधिक पद परस्पर मिलकर नया शब्द बनाते हैं, तो उनके बीच की विभक्तियाँ लुप्त हो जाती हैं और बना हुआ शब्द समास कहलाता है।

यथा — रामस्य पुत्रः = रामपुत्रः

विशालः बाहुः यस्य सः = विशालबाहुः।

विग्रह – समास के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जिन पदों को अलग किया जाता है, उन्हें विग्रह कहते हैं। यथा— रामस्य पुत्रः, विशालः बाहुः यस्य सः।

समस्त-पद – समास होने पर जो शब्द बनता है, उसे समस्त पद या सामासिक पद कहते हैं।

यथा — रामपुत्रः, विशालबाहुः।

समास के भेद

समास के प्रमुख रूप से छह भेद हैं—

(1) अव्ययीभाव समास (2) तत्पुरुष समास (3) कर्मधारय समास (4) द्विगु समास
(5) बहुव्रीहि समास (6) द्वन्द्व समास

(1) तत्पुरुष समास

जिसमें प्रायः उत्तर पद का अर्थ प्रधान होता है वह तत्पुरुष नामक तृतीय समास कहलाता है। **'प्रायेणोत्तरपदार्थ प्रधानस्तत्पुरुषः।'** यथा — 'गंगा जलम् आनय।' यहाँ आनय इस क्रिया पद के साथ जल का ही साक्षात् सम्बन्ध होता है। अतः 'जल' उत्तर पद का अर्थ ही प्रधान होने के कारण यहाँ तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के भेद

(क) व्यधिकरण तत्पुरुष समास– जिस तत्पुरुष समास में प्रथम पद या पूर्व पद तथा द्वितीय पद या उत्तर पद दोनों भिन्न-भिन्न विभक्तियों में हों, वह व्यधिकरण तत्पुरुष होता है।

यथा— गोसुखम् में गोभ्यः चतुर्थी विभक्ति में है तथा सुखम् प्रथमा विभक्ति है। इस प्रकार दोनों पृथक्-पृथक् विभक्तियों में होने से यह व्यधिकरण तत्पुरुष समास है। व्यधिकरण तत्पुरुष के **छह भेद** किये गये हैं— (1) द्वितीया तत्पुरुष, (2) तृतीया तत्पुरुष, (3) चतुर्थी तत्पुरुष, (4) पंचमी तत्पुरुष, (5) षष्ठी तत्पुरुष, (6) सप्तमी तत्पुरुष अर्थात् प्रथम पद जिस विभक्ति का है वह उसी विभक्ति से सम्बन्धित तत्पुरुष होगा।

यथा—

द्वितीया तत्पुरुष

सामासिक पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
कृष्णाश्रितः	कृष्णम् आश्रितः	कृष्ण के आश्रित
शरणागतः	शरणम् आगतः	शरण में आया हुआ
लोकातीतः	लोकम् अतीतः	लोक से परे
भयापन्नः	भयम् आपन्नः	भय को प्राप्त
रामाश्रितः	रामम् आश्रितः	राम के आश्रित

सुखप्राप्तः	सुखं प्राप्तः	सुख को प्राप्त हुआ
अश्वारूढ़ः	अश्वम् आरूढ़ः	घोड़े पर आरूढ़
स्वर्गगतः	स्वर्गं गतः	स्वर्ग को गया हुआ

तृतीया तत्पुरुष

हरित्रातः	हरिणा त्रातः	विष्णु से रक्षा किया गया
पादखञ्जः	पादेन खञ्जः	पैर से लँगड़ा
बाणाहतः	बाणेन आहतः	बाण से घायल
धान्यार्थः	धान्येन अर्थः	धान्य से धन
नेत्रहीनः	नेत्राभ्यां हीनः	नेत्रों से रहित
मातासदृशः	मातया सदृशः	माता के समान
घृतपक्वम्	घृतेन पक्वम्	घी से पकाया हुआ
मासपूर्वः	मासेन पूर्वः	महीने से पहले

चतुर्थी तत्पुरुष

यूपदारुः	यूपाय दारुः	यूप के लिए दारु
धनकामना	धनाय कामना	धन के लिए कामना
सुखार्थम्	सुखाय इदम्	सुख के लिए
धनार्थम्	धनाय इदम्	धन के लिए
भूतबलिः	भूतेभ्यः बलिः	भूतों के लिए बलि
कुम्भमृत्तिका	कुम्भाय मृत्तिका	घड़े के लिए मिट्टी
भक्तप्रियः	भक्तेभ्यः प्रियः	भक्तों के लिए प्रिय

पंचमी तत्पुरुष

चौरभयम्	चौरात् भयम्	चोर से भय
बन्धनमुक्तः	बन्धनात् मुक्तः	बन्धन से मुक्त
राजभयम्	राज्ञः भयम्	राजा से भय
वृक्षपतितः	वृक्षात् पतितः	वृक्ष से गिरा हुआ
सिंहभीतः	सिंहात् भीतः	सिंह से डरा हुआ
अश्वपतितः	अश्वात् पतितः	घोड़े से गिरा हुआ
मार्गभ्रष्टः	मार्गात् भ्रष्टः	मार्ग से भ्रष्ट हुआ

षष्ठी तत्पुरुष

नरपतिः	नराणां पतिः	मनुष्यों का स्वामी
विद्यालयः	विद्यायाः आलयः	विद्या का घर
राजमाता	राज्ञः माताः	राजा की माता
भरतमाता	भरतस्य माता	भरत की माता
ईश्वरभक्तः	ईश्वरस्य भक्तः	ईश्वर का भक्त
सीतापतिः	सीतायाः पतिः	सीता का पति
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष
राजपुत्रः	राज्ञः पुत्रः	राजा का पुत्र

नन्दनन्दनः	नन्दस्य नन्दनः	नन्द का नन्दन
कृष्णसखः	कृष्णस्य सखः	कृष्ण का सखा
प्रजापतिः	प्रजायाः पतिः	प्रजा का पति
रामानुजः	रामस्य अनुजः	राम का अनुज
देवपूजा	देवस्य पूजा	देव की पूजा
दशरथपुत्रः	दशरथस्य पुत्रः	दशरथ के पुत्र
राजकुमारः	राज्ञः कुमारः	राजा का कुमार
राजसेवकः	राज्ञः सेवकः	राजा का सेवक

सप्तमी तत्पुरुष

अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः	पासों में शौण्ड चतुर
गुरुभक्तिः	गुरौ भक्तिः	गुरु में भक्ति
कला निपुणः	कलासु निपुणः	कलाओं में श्रेष्ठ
पुरुषोत्तमः	पुरुषेषु उत्तमः	पुरुषों में श्रेष्ठ
मुनिश्रेष्ठः	मुनिषु श्रेष्ठः	मुनियों में श्रेष्ठ
क्षेत्रोत्पन्नः	क्षेत्रे उत्पन्नः	क्षेत्र में उत्पन्न
रणकुशलः	रणे कुशलः	रण में कुशल
कार्यकुशलः	कार्ये कुशलः	कार्य में कुशल
कूपपतितः	कूपे पतितः	कुएं में गिरा हुआ

(ख) समानाधिकरण तत्पुरुष समास — जिसमें दोनों पदों की विभक्ति समान हो उसे समानाधिकरण तत्पुरुष समास कहते हैं। इसे ही कर्मधारय समास भी कहा जाता है। यथा — 'कृष्णः सर्पः अपसर्पति' इस वाक्य में सर्प की गमन क्रिया के साथ-साथ उसकी विशेषता भी बतायी है। प्रथम पद कृष्णः तथा द्वितीय पद सर्पः एक ही प्रथमा विभक्ति के रूप हैं। अतः यहाँ समानाधिकरण तत्पुरुष समास है।

तत्पुरुष समास के उपभेद – उपर्युक्त व्यधिकरण तथा समानाधिकरण समास के अतिरिक्त तत्पुरुष के अन्य उपभेद भी इस प्रकार हैं—

(क) नञ् तत्पुरुष समास – जिस समास का पूर्व पद नञ् (न) हो तथा उत्तर पद कोई संज्ञा या विशेषण युक्त हो उसे नञ् समास कहते हैं। यथा—

अनश्वः	न अश्वः	जो अश्व न हो
अकृतम्	न कृतम्	जो किया न हो
अनिच्छा	न इच्छा	इच्छा न हो
अनागतम्	न आगतम्	जो आया न हो
अगजः	न गजः	जो गज न हो
अनुक्तः	न उक्तः	जो उक्त न हो
अपुत्रः	न पुत्रः	जो पुत्र न हो

(ख) प्रादि तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास का पूर्व पद 'कु' (अव्यय) गति संज्ञक शब्द या 'प्र' आदि होता है, उसे गति तत्पुरुष एवं प्रादि तत्पुरुष समास कहते हैं। यथा— 'कुपुरुषः'—कुत्सितः पुरुषः। 'प्राचार्यः' — 'प्रगतः आचार्यः'।

(ग) उपपद तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में पूर्वपद उपपद (सुबन्त) तथा उत्तर पद कृत् प्रत्ययान्त (तिङन्त भिन्न समर्थ पद) होता है, वह उपपद तत्पुरुष समास कहलाता है। यथा—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
कुम्भकारः	कुभं करोति	जो कुम्भ बनाता है।
धर्मज्ञः	धर्मं जानाति	जो धर्म जानता है।
सामगः	सामं गायति	जो सामवेद को जानता है।

आसनस्थः	आसने तिष्ठति	जो आसन पर बैठता है।
धनदः	धनं ददाति	जो धन देता है।

(घ) अलुक् तत्पुरुष समास – जब तत्पुरुष में प्रथम पद अर्थात् पूर्व पद की विभक्ति का लोप नहीं होता तब उसे अलुक् तत्पुरुष कहते हैं। जैसेः–

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
युधिष्ठिरः	युधि स्थिरः	युद्ध में स्थिर युधिष्ठिर
कृच्छ्रादागतः	कृच्छ्रात् आगतः	कठिनाई से आगत
सरसिजम्	सरसि जातम्	तालाब में उत्पन्न
खेचरः	खे चरति	आकाश में विचरण करनेवाला पक्षी
अभ्यासादागतः	अभ्यासात् आगतः	अभ्यास से आया हुआ
वाचस्पतिः	वाचः पतिः	बृहस्पति
आत्मनेपदम्	आत्मने पदम्	अपने लिए पद
परस्मैपदम्	परस्मैपदम्	दूसरे के लिए पद

(2) कर्मधारय समास

'विशेषणं विशेष्येण बहुलम्' अर्थात् जहाँ विशेषण का समानाधिकरण विशेष्य के साथ बहुलता से होता है वहाँ कर्मधारय समास होता है। यह समास तत्पुरुष समास का ही एक भेद है। इस समास में दोनों पदों की विभक्तियाँ समान होती हैं। यदि लिंग विषम है तो द्वितीय पद अर्थात् उत्तर पद के आधार पर लिंग का निर्णय किया जाता है। कर्मधारय समास के भी चार भेद हैं—

(क) विशेषण पूर्वपद कर्मधारय – समानाधिकरण तत्पुरुष समास में यदि प्रथम पद विशेषण तथा द्वितीय पद विशेष्य होता है तो उसे विशेषण पूर्व पद कर्मधारय कहते हैं। यथा—

समस्त पद	**समास विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
मधुरफलम्	मधुरं च तत्फलम्	मधुर जो फल
श्रेष्ठपुरुषाः	श्रेष्ठाः च ते पुरुषाः	श्रेष्ठ जो पुरुष
अन्धतमम्	अन्धं च तत् तमः	अन्धा करनेवाला तम
नीलाकाशः	नीलः आकाशः	नीला आकाश
महापुरुषः	महान् चासौ पुरुषः	महान् पुरुषः
महर्षिः	महान् चासौ ऋषिः	महान् ऋषि
गौरः बालकः	गौरः बालकः	गोरा बालक
महाराजः	महान् चासौ राजा	महान् राजा
सुन्दरबालकः	सुन्दरः च असौ बालकः	सुन्दर जो बालक
कृष्णसर्पः	कृष्णः सर्पः	काला सांप
महादेवः	महान् चासौ देवः	महादेव
श्वेताश्वः	श्वेतश्चासौ अश्वः	श्वेत घोड़ा
महारथीः	महान् चासौ रथी	महान् रथी
रक्तोत्पलम्	रक्तं च तत् उत्पलम्	लाल कमल
श्वेत वस्त्रः	श्वेत च तत् वस्त्रम्	श्वेत वस्त्र

(ख) उपमान पूर्वपद कर्मधारय— जब उपमानवाचक शब्द के साथ साधारण धर्मवाचक शब्दों का समास होता है वह उपमान पूर्वपद कर्मधारय होता है।

यथा—

पुरुषसिंहः	पुरुषः सिंहः इव	सिंह के समान पुरुष
नरसिंहः	नरः सिंह इव	मनुष्य सिंह के समान
चन्द्राह्लादकः	चन्द्र इव आह्लादक	चन्द्र के समान कोमल

कमलकोमलम्	कमलम् इव कोमलम्	कमल के समान कोमल
पुरुषव्याघ्र	पुरुषः व्याघ्र इव	व्याघ्र के समान पुरुष

(ग) रूपक कर्मधारय – उपमान और उपमेय के अभिन्न रूप से कल्पित होने से, उपमान-उपमेय पद के समास को रूपक कर्मधारय समास कहते हैं। यथा—

शोकाग्नि	शोक एव अग्नि	शोकरूपी अग्नि
विद्याधनम्	विद्या एव धनम्	विद्यारूपी धन
मुखकमलम्	मुखमेव कमलम्	मुखरूपी कमल
परीक्षापयोधिः	परीक्षा एव पयोधि	परीक्षारूपी सागर

(घ) उभयपद विशेषण कर्मधारय – इस समास में विशेषण का विशेष्य के साथ समास होता है। यथा—

पीतकृष्णः	पीतः चासौ कृष्णः	पीला और काला
श्वेतकृष्णः	श्वेतः चासौ कृष्णः	श्वेत और काला
चराचरम्	चरं च अचरम् च	चराचर
सुप्तोत्थितः	पूर्वम् सुप्तः पश्चात् उत्थितः	पहले सोया फिर उठा
कृताकृतम्	कृतं च अकृतं च	किया हुआ और न किया हुआ

(3) बहुव्रीहि समास

'अनेकम् अन्य-पदार्थे' अर्थात् जिसमें पूर्व तथा उत्तर पद अप्रधान तथा अन्य पद प्रधान होता है वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। तात्पर्य यह है कि बहुव्रीहि में जितने भी पद होते हैं वे सभी मिलकर किसी दूसरे पद के विशेषण होते हैं— **प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहि। उदाहरणतया**—लम्बोदरः— लम्बं उदरं यस्य सः। यहाँ लम्बं उदरं दोनों विशेषण विशेष्य तो हैं लेकिन वे किसी अन्य (गणेश) की विशेषता बता रहे हैं।

➡ बहुव्रीहि समास के भेद :

(क) समानाधिकरण बहुव्रीहि — इसके दोनों पदों में समान विभक्ति होती है। यथा—

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी-अर्थ**
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	पीले वस्त्र वाला
लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	लम्बा है उदर जिसका
जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः (मुनिः)	जीत ली हैं इन्द्रियाँ जिसने
श्वेताम्बरः	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः (साधु)	श्वेत हैं वस्त्र जिसके
नीलकण्ठः	नीलं कण्ठं यस्य सः (शिवः)	नीला है कण्ठ जिसका
लब्धप्रतिष्ठाः	लब्धा प्रतिष्ठा येन सः (विद्वान्)	प्राप्त कर ली है प्रतिष्ठा जिसने
दामोदरः	दामम् उदरं यस्य सः (श्रीकृष्णः)	रस्सी है उदर पर जिसके
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यम् सः	जल जिसे प्राप्त है
महाशयः	महान् आशयः यस्य सः	सभ्य व्यक्ति
यशोधनः	यशः एव धनं यस्य सः (राजा)	यश ही है धन जिसका

(ख) व्यधिकरण बहुव्रीहि — इसके दोनों पद अलग-अलग विभक्तियों में होते हैं। यथा—

चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः (विष्णु)	चक्र है पाणि में जिसके
वीणापाणिः	वीणा पाणौ यस्या सा (सरस्वती)	वीणा है पाणि में जिसके
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः (शिव)	चन्द्र है शिखर पर जिसके
पीयूषपाणि	पीयूषः पाणौ यस्य सः (वैद्य)	पीयूष है पाणि में जिसके
मृगनयनी	मृगस्य नयने इव नयने यस्या सा (स्त्री)	मृग के नयनों के समान हैं नयन जिसके।

(ग) व्यतिहार बहुव्रीहि — युद्ध, लड़ाई आदि का ज्ञान करानेवाले सप्तम्यन्त तथा तृतीयान्त पदों में जो समास होता है उसे व्यतिहार बहुव्रीहि कहते हैं। यथा—

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
केशाकेशि	केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तम्	बालों को पकड़कर प्रारम्भ होने वाला युद्ध

हस्ताहस्ति	हस्ताभ्यां हस्ताभ्यां प्रवृत्तं युद्धम्	हाथों से प्रवृत्त हुआ युद्ध

(घ) तुल्य योग बहुव्रीहि — जब बहुव्रीहि समास में साथ अर्थ वाले 'सह' का समास होता है, तब तुल्य योग बहुव्रीहि होता है। 'सह' का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—

समस्त पद	**समास-विग्रह**	**हिन्दी अर्थ**
सार्जुनः	अर्जुनेन सह	अर्जुन के साथ
सराधिकः	राधिकया सह इति (कृष्ण)	राधिका के साथ
सभार्यः	भार्यया सह	स्त्री सहित
सकलम्	कलाभिः समम्	कलाओं से युक्त
ससीतः	सीतया सह (रामः)	सीता के साथ

समास (हल सहित)

नरपतिः	नराणां पतिः	षष्ठी तत्पुरुषः
श्वेताम्बरः	श्वेतं अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
गुरुसेवा	गुरोः सेवा	षष्ठी तत्पुरुषः
जननीजन्मभूमिः	जनन्याः जन्मभूमिः	षष्ठी तत्पुरुषः
भग्नमनोरथः	भग्नः मनोरथः यस्य सः	बहुव्रीहि
विशालतरुः	विशालः चासौ तरुः	कर्मधारयः
मुनिश्रेष्ठः	मुनिषु श्रेष्ठः	सप्तमी तत्पुरुषः
महाकविः	महान् चासौ कविः	कर्मधारयः
राजमाता	राज्ञः माता	षष्ठी तत्पुरुषः
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः	बहुव्रीहि
पीताम्बरः	पीतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
पुरुषव्याघ्रः	पुरुषः व्याघ्रः इव	कर्मधारयः
सीतापतिः	सीतायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
चित्रगुः	चित्रा गावः यस्य सः	बहुव्रीहि
नीलकंठः	नीलं कंठ यस्य सः	बहुव्रीहि
कृष्णसर्पः	कृष्णः चासौ सर्पः	कर्मधारय
शास्त्रपटुः	शास्त्रे पटुः	सप्तमी तत्पुरुष
गुरुभक्तिः	गुरौ भक्तिः	सप्तमी तत्पुरुष
कुम्भकारः	कुम्भं करोति	उपपद तत्पुरुष
घनश्यामः	घन इव श्यामः	कर्मधारय
चक्रपाणिः	चक्रौ पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष
नीलाम्बरं	नीलं अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
लम्बोदरः	लम्बं उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि
रमापतिः	रमायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
कृष्णाश्रितः	कृष्णं आश्रितः	द्वितीया तत्पुरुष
महाराजः	महान चासौ राजा	कर्मधारय
पञ्चाननः	पंचानि आननानि यस्य सः	बहुव्रीहि
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष
चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि
पितृभक्तः	पितरि भक्तः	सप्तमी तत्पुरुष

दिव्याम्बरः	दिव्यम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि
चन्द्रशेखरः	चन्द्रः शेखरे यस्य सः	बहुव्रीहि
चोरभयम्	चौरात् भयम्	पञ्चमी तत्पुरुष
नीलकमलम्	नीलमेव कमलम्	कर्मधारय
पुरुषसिंहः	पुरुषः सिंहः इव	कर्मधारय
लम्बोदरः	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
जलदः	जलं ददाति	उपपद तत्पुरुष समास
अध्ययनकुशलः	अध्ययने कुशलः	सप्तमी तत्पुरुष
ईश्वरभक्तः	ईश्वरस्य भक्तः	षष्ठी तत्पुरुष
नीलोत्पलम्	नीलम् उत्पलम्	कर्मधारय
राजपुत्रः	राज्ञः पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष
दशरथपुत्रः	दशरथस्य पुत्रः	षष्ठी तत्पुरुष समास
राजकुमारः	राज्ञः कुमारः	षष्ठी तत्पुरुष समास
राजसेवकः	राज्ञः सेवकः	षष्ठी तत्पुरुष
नीलोत्पलम्	नीलं च तत् उत्पलम्	कर्मधारय समास
महापुरुषः	महान चासौ पुरुषः	कर्मधारय समास
भरतमाता	भरतस्य माता	षष्ठी तत्पुरुष
हरित्रातः	हरिणा त्रातः	तृतीया तत्पुरुष
अपुत्रः	न पुत्रः	नञ् तत्पुरुष
रक्तोत्पलम्	रक्तम् उत्पलम्	कर्मधारय समास
दशाननः	दशः आननः यस्य सः	बहुव्रीहि समाम
सीतापतिः	सीतायाः पतिः	षष्ठी तत्पुरुष
उपसमुद्रम्	समुद्रस्य समीपम्	अव्ययीभाव
लम्बोदर	लम्बम् उदरं यस्य सः	बहुव्रीहि
ईश्वरभक्तः	ईश्वरस्य भक्तः	षष्ठी तत्पुरुष
चरणकमलम्	कमल इव चरणम्	कर्मधारय
राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	षष्ठी तत्पुरुष समास
नीलकमलम्	नीलम् इव कमलम्	कर्मधारय समास
देवालयः	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यं स	बहुव्रीहि समास
श्वेताम्बरः	श्वेतम् अम्बरं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
जीवनप्राप्तः	जीवनम् प्राप्तः	द्वितीया तत्पुरुष समास
नीलोत्पलम्	नीलं च तत् उत्पलम्	कर्मधारय समास
नीलकमलम्	नीलमेव कमलम्	कर्मधारय समास
देवालयः	देवस्य आलयः	षष्ठी तत्पुरुष समास
यूपदारुः	यूपाय दारुः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
जितेन्द्रियः	जितानि इन्द्रियाणि येन सः	बहुव्रीहि समास
चोरभयम्	चौरात् भयम्	पंचमी तत्पुरुष समास
भूतवलिः	भूतेभ्यः वलिः	चतुर्थी तत्पुरुष समास
प्राप्तोदकः	प्राप्तं उदकं यस्य सः	बहुव्रीहि समास
कष्टापन्नः	कष्टम् आपन्नः	द्वितीया तत्पुरुष समास

●●